Set-A

आदर्श उत्तरमाला वार्षिक परीक्षा 2025-26

कक्षा-12

विषय – इतिहास

विषय कोड- 1216

समय-3 घंटा **पूर्णांक-100 अंक**

1. सही विकल्प चुनकर लिखिए- **(1*6=6)**

I. (ब) पुरुष का समाज में प्रभुत्व
II. (स) कांसा
III. (अ) रिहला
IV. (अ) बंगाल
V. (अ) 1915
VI. (द) विष्णु

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- **(1*6=6)**

I. गुजरात
II. व्यक्तिगत स्वार्थ
III. समुद्र गुप्त
IV. तीन
V. शिव
VI. महात्मा गाँधी

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य/ असत्य में लिखिए-(1*6=6)

I. सत्य
II. असत्य
III. असत्य
IV. सत्य
V. सत्य
VI. सत्य

4. सही जोड़ी बनाइए- **(1*7=7)**

क	ख
1. कृष्णदेव राय	(अ) तुलुब वंश
2. हरिहर	(ब) संगम वंश
3. हम्पी	(स) विजयनगर
4. अमरनायक	(द) सैनिक अधिकारी
5. मंडप	(इ) स्तंभयुक्त सभा-स्थान
6. समानता का अधिकार	(फ) अनुच्छेद 16
7. शोष के विरुद्ध अधिकार	(ज) अनुच्छेद 24

5. एक वाक्य में उत्तर दीजिए- **(1*7=7)**

I. फ्रांस्वा बर्नियर (François Bernier) एक फ्रांसीसी चिकित्सक, यात्री और दार्शनिक था, जो 17वीं शताब्दी (1658-1670) में मुगल बादशाह औरंगजेब के काल में भारत आया था ।

II. निर्गुण भक्ति धारा (निराकार ईश्वर में विश्वास) के लिए प्रसिद्ध संत कवियों में कबीरदास, रैदास (रविदास), गुरु नानक देव, दादू दयाल, मलूकदास और सुंदरदास प्रमुख हैं।

III. टोडरमल की भू-राजस्व व्यवस्था (दहशाला या जब्ती प्रणाली) में **'पोलाज' (Polaj)** भूमि कभी भी खाली नहीं रहती थी। यह सबसे उपजाऊ भूमि होती थी, जिस पर हर वर्ष या हर फसल में नियमित रूप से खेती की जाती थी।

IV. नील की जबरन खेती किसानों के लिए अत्यंत हानिकारक थी, क्योंकि यह मिट्टी की उर्वरता को पूरी तरह नष्ट कर देती थी, जिससे भूमि बंजर हो जाती थी।

V. 1857 के विद्रोह का प्रारंभ औपचारिक रूप से **10 मई 1857** को **मेरठ (Meerut)** से शुरू हुआ था। मेरठ छावनी में भारतीय सिपाहियों ने नए कारतूसों के इस्तेमाल से इनकार कर दिया ।

VI. भारत सरकार अधिनियम , 1919 (Government of India Act 1919) को मुख्य रूप से मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (Montagu-Chelmsford Reforms) या मोंटफोर्ड सुधार के नाम से जाना जाता है। यह ब्रिटिश संसद द्वारा पारित एक ऐतिहासिक अधिनियम था, जिसका नाम तत्कालीन भारत सचिव 'एडविन मोंटेग्यू' और वायसराय 'लॉर्ड चेम्सफोर्ड' के नाम पर रखा गया था।

VII. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 356 (Article 356) के तहत केंद्र सरकार को यह अधिकार मिलता है कि वह राज्य सरकार के अधिकारों को अपने हाथ में ले सके। इसे सामान्य भाषा में 'राष्ट्रपति शासन' (President's Rule) कहा जाता है।

06. वैष्णववाद और शैववाद के बीच मुख्य अंतर उनके प्रमुख आराध्य देव हैं।

1. वैष्णववाद भगवान विष्णु और उनके विभिन्न अवतारों (जैसे राम और कृष्ण) को सर्वोच्च ईश्वर के रूप में पूजता है।
2. शैववाद भगवान शिव को सर्वोच्च ईश्वर के रूप में पूजता है।

अथवा

जैन धर्म के पाँच महाव्रत हैं:

1. अहिंसा: किसी भी जीवित प्राणी को जानबूझकर नुकसान न पहुँचाना।
2. सत्य : हमेशा सच बोलना ।
3. अस्तेय : चोरी न करना ।
4. ब्रह्मचर्य : शुद्ध आचरण और वैवाहिक निष्ठा (या संयम)।
5. अपरिग्रह : धन और संपत्ति का संचय न करना।

07. भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

1. ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम और समर्पण पर बल।
2. अनुष्ठानों और जटिल धार्मिक कृत्यों की जगह सरल पूजा-पद्धति।
3. जाति, पंथ या लिंग के आधार पर भेदभाव को अस्वीकार करना।
4. आम लोगों की स्थानीय भाषाओं में उपदेश देना।

अथवा

सगुण और निर्गुण भक्ति में अंतर:

सगुण भक्ति ईश्वर को एक विशिष्ट रूप, गुण और आकार (जैसे राम या कृष्ण) के साथ पूजती है।
निर्गुण भक्ति ईश्वर को निराकार, अमूर्त और गुणों से परे मानती है।

08. मुगलकाल में ग्राम पंचायत के मुखिया (मुकद्दम या प्रधान) के दो प्रमुख कार्य:

1. गाँव के राजस्व (लगान) को इकट्ठा करना और सरकारी खजाने में जमा करवाना।
2. गाँव में शांति, सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखना, तथा छोटे-मोटे विवादों को सुलझाना।

अथवा

मुगल शासन के दौरान ग्राम पंचायतों के राजस्व के दो स्रोत:

1. गाँव के निवासियों द्वारा दिया जाने वाला कर (लगान या भू-राजस्व)।
2. गाँव के सामान्य कोष (जिसे अक्सर 'फोंड' या 'चंदा' कहा जाता था) में जमा की गई राशि।

अथवा

09. 1857 के विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने विभिन्न रणनीतियाँ अपनाईं।

1. जिनमें सैन्य शक्ति का क्रूर उपयोग, .ब्रिटिश सेना ने विद्रोहियों के खिलाफ अपनी बेहतर सैन्य शक्ति, अनुशासन और आधुनिक हथियारों का इस्तेमाल किया।
2. विद्रोह के नेताओं को पकड़ना और मारना, और क्षेत्रों पर नियंत्रण बहाल करना शामिल था।
3. उन्होंने विद्रोह के प्रमुख केंद्रों जैसे दिल्ली, कानपुर, और लखनऊ पर फिर से कब्जा कर लिया।
4. विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने कठोर दमनकारी नीतियां अपनाईं, जिसमें स्थानीय लोगों को भी निशाना बनाया गया।

अथवा

1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण 'एनफ़ील्ड' राइफलों में इस्तेमाल किए जाने वाले कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी होने की अफवाह थी।
इन कारतूसों को इस्तेमाल करने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था।
यह हिंदू और मुस्लिम दोनों सैनिकों की धार्मिक भावनाओं को आहत करता था, क्योंकि गाय हिंदुओं के लिए पवित्र थी और सुअर मुसलमानों के लिए वर्जित था।
इस अफवाह ने सैनिकों में भारी असंतोष पैदा किया, जो पहले से ही ब्रिटिश नीतियों से नाराज़ थे, और विद्रोह की चिंगारी भड़का दी।

10 बौद्ध धर्म के प्रचार के अशोक द्वारा किए गए लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए।
1. धर्म महामात्रों की नियुक्ति जिनका काम लोगों के बीच धर्म के सिद्धांतों का प्रचार करना था।
2. अपने संदेशों को पत्थरों और स्तंभों पर खुदवाया ताकि आम लोग उन्हें पढ़ सकें।
3. बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा।
4. कई स्तूपों और विहारों का निर्माण करवाया और बौद्ध धर्म सभाओं का आयोजन किया।

अथवा

मौर्य वंश के बारे में जानने के लिए कई ऐतिहासिक स्रोत उपलब्ध हैं।
साहित्यिक स्रोत:
1. कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्य प्रशासन और अर्थव्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी देता है।
2. मेगस्थनीज की इंडिका हालांकि अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है, लेकिन बाद के लेखकों के उद्धरणों के माध्यम से मौर्य समाज और प्रशासन पर प्रकाश डालती है।
3. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस नाटक चंद्रगुप्त मौर्य के सत्ता में आने की कहानी बताता है।
पुरातात्विक स्रोत:
अशोक के शिलालेख और स्तंभ लेख मौर्य साम्राज्य की सीमा, धर्म और नीतियों के बारे में प्राथमिक स्रोत हैं। सांची और सारनाथ के स्तूप जैसी स्थापत्य कला भी मौर्य काल की जानकारी देती है।

11. महाभारत इतिहास के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह-
- भारतीय समाज के रीति-रिवाजों, पारिवारिक संरचनाओं, नैतिकता और मूल्यों को दर्शाता है।
- राजनीतिक और कानूनी पहलू: इसमें शासन कला, युद्ध के नियम और न्याय के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है, जो उस समय की राजनीतिक सोच को उजागर करते हैं।
- धार्मिक और दार्शनिक विचार: महाभारत में, विशेषकर भगवद गीता के माध्यम से, प्रमुख धार्मिक और दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत किया गया है, जो हिंदू धर्म के विकास को समझने में मदद करते हैं।

अथवा

प्राचीन भारतीय समाज में विवाह और परिवार के नियमों की विशेषताएँ -
1. प्राचीन भारतीय समाज में विवाह और परिवार के नियम धर्मशास्त्रों और गृहसूत्रों पर आधारित थे, जिनमें वर्ण व्यवस्था, पितृसत्तात्मक संरचना और विवाह के विभिन्न रूपों पर जोर दिया गया था।
2. विवाह के प्रकार: आठ प्रकार के विवाहों का वर्णन किया गया था (जैसे ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, असुर, गंधर्व, राक्षस, पैशाच), जिनमें से पहले चार को आदर्श माना जाता था।
3. पितृसत्तात्मक परिवार: परिवार की संरचना मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक थी, जहां पिता या घर का मुखिया महत्वपूर्ण निर्णय लेता था और वंश पिता से पुत्र को चलता था।

4. वर्ण और जाति के नियम: विवाह आमतौर पर अपने ही वर्ण या जाति के भीतर होते थे, हालांकि अनुलोम (उच्च वर्ण के पुरुष और निम्न वर्ण की स्त्री) और प्रतिलोम (निम्न वर्ण के पुरुष और उच्च वर्ण की स्त्री) विवाहों का भी उल्लेख मिलता है।

कोई दो पॉइंट लिखने पर पूरे अंक दिए जाए

12. 'किताब उल हिन्द' अल-बिरूनी द्वारा अरबी भाषा में लिखी गई एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो 11वीं शताब्दी के भारत के समाज, धर्म, विज्ञान और संस्कृति का विस्तृत विवरण देती है।

विषय वस्तु: इस ग्रंथ में धर्म और दर्शन, त्योहारों, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाजों और प्रथाओं, सामाजिक जीवन, भार और माप, मूर्तिकला, कानून और माप-तोल जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया हैं।

अथवा

बर्नियर के अनुसार भारत तथा यूरोप के मध्य मूल असमानताओं में से एक निजी भू-स्वामित्व का अभाव था। फ्रांस्वा बर्नियर ने अपने यात्रा वृतांत में तर्क दिया कि भारत में भूमि का स्वामित्व राज्य के पास था, न कि व्यक्तियों के पास, जैसा कि यूरोप में था। उनका मानना था कि इस कारण से भारत में भूमि का विकास नहीं हुआ, क्योंकि किसानों के पास अपनी जमीन में निवेश करने का प्रोत्साहन नहीं था, जिससे अंततः गरीबी और असमानता बढ़ी।

13. 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले तीन प्रमुख नायक मंगल पांडे, रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे थे।

1. मंगल पांडे: उन्होंने बैरकपुर में ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला करके विद्रोह की पहली चिंगारी जलाई।
2. रानी लक्ष्मीबाई: उन्होंने झांसी की रक्षा के लिए अंग्रेजों के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी और युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुईं।
3. तात्या टोपे: उन्होंने कानपुर में नाना साहब के साथ मिलकर विद्रोह का नेतृत्व किया और गोरिल्ला युद्ध रणनीति का इस्तेमाल किया।

अथवा

सहायक संधि लॉर्ड वेलेजली द्वारा शुरू की गई एक प्रणाली थी, जिसके तहत भारतीय शासकों को अपनी संप्रभुता खोनी पड़ी और वे अंग्रेजों पर निर्भर हो गए, जिससे वे शक्तिहीन हो गए। इस संधि में निम्न शर्तें थीं -

1. शासकों को अपने क्षेत्र में एक ब्रिटिश सेना रखनी पड़ती थी और उसका खर्च उठाना पड़ता था।
2. वे अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी अन्य शासक के साथ संधि या युद्ध नहीं कर सकते थे।

14. साईमन कमीशन के बारे में विस्तार से जानकारी:

1. साईमन कमीशन, जिसे आधिकारिक तौर पर भारतीय सांविधिक आयोग (Indian Statutory Commission) कहा जाता है, का गठन नवंबर 1927 में ब्रिटिश सरकार द्वारा किया गया था।
2. इसका मुख्य उद्देश्य 1919 के भारत सरकार अधिनियम के कामकाज की समीक्षा करना और भारत में संवैधानिक सुधारों का सुझाव देना था।
3. कमीशन में सात ब्रिटिश संसद सदस्य थे और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें कोई भी भारतीय सदस्य शामिल नहीं था, जिसके कारण इसका भारत में व्यापक विरोध हुआ।
4. जब कमीशन 3 फरवरी 1928 को भारत पहुंचा, तो देशव्यापी हड़तालों और "वापस जाओ, साईमन" ("Go Back, Simon") के नारों के साथ इसका स्वागत किया गया।

अथवा

गांधी-इर्विन समझौते की प्रमुख शर्तें निम्नलिखित थीं:-

1. यह समझौता 5 मार्च 1931 को महात्मा गांधी और तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन के बीच हुआ, जिसे 'दिल्ली समझौता' भी कहा जाता है.
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) की ओर से गांधीजी सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement) को स्थगित करने पर सहमत हुए.
3. ब्रिटिश सरकार राजनीतिक कैदियों को रिहा करने पर सहमत हुई, जिनके खिलाफ हिंसा के आरोप नहीं थे.
4. कांग्रेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (Second Round Table Conference) में भाग लेने पर सहमत हुई.

15. हड़प्पा सभ्यता की जानकारी के स्रोत निम्नलिखित हैं -

1. हड़प्पा सभ्यता के बारे में जानकारी मुख्य रूप से पुरातात्विक स्रोतों से प्राप्त हुई है, क्योंकि इसकी लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। प्रमुख स्रोत हैं:
2. खुदाई में प्राप्त पुरातत्व सामग्री, जैसे मुहरें, मिट्टी के बर्तन, औजार और आभूषण.
3. नगर नियोजन और वास्तुकला के अवशेष, जो एक सुनियोजित शहरी जीवन को दर्शाते हैं.
4. कब्रिस्तान और दफन प्रथाओं से सामाजिक और धार्मिक जीवन की जानकारी.

अथवा

मोहनजोदड़ो के सुनियोजित नगर होने के निम्न कारण हैं :-

1. नगर दो भागों में विभाजित था: दुर्ग (Citadel) और निचला शहर (Lower Town).
2. सड़कें सीधी थीं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं, जिसे ग्रिड प्रणाली (Grid System) कहा जाता है.
3. पक्की ईंटों का मानकीकृत उपयोग और एक उन्नत जल निकासी प्रणाली (Drainage System) थी.
4. विशाल स्नानागार (Great Bath) और अन्नागार (Granaries) जैसी सार्वजनिक इमारतें उन्नत इंजीनियरिंग का प्रमाण हैं.

16. भक्ति और सूफी परम्पराओं का कला और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा:

1. संगीत: कव्वाली (Qawwali) और कीर्तन (Kirtan) जैसी संगीत शैलियों का विकास हुआ.
2. साहित्य: क्षेत्रीय भाषाओं में भक्ति काव्य और साहित्य का सृजन हुआ.
3. वास्तुकला: दरगाहों (Dargahs) और मंदिरों (Temples) का निर्माण हुआ.
4. सामाजिक: सहिष्णुता और सद्भाव की भावना बढ़ी, जिससे गंगा-जमुनी तहज़ीब का विकास हुआ.

अथवा

भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. भक्ति आंदोलन की विशेषताएँ, जिनके कारण यह जनसाधारण में प्रसारित हो सका:
2. सरल भक्ति मार्ग: ईश्वर तक पहुंचने के लिए कर्मकांडों की जगह सरल भक्ति और प्रेम का मार्ग सुझाया गया.
3. जाति-पाति का विरोध: संतों ने ज़ाति व्यवस्था की निंदा की और समानता पर जोर दिया.
4. क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग: उपदेश संस्कृत के बजाय आम लोगों की स्थानीय भाषाओं में दिए गए.
5. सामाजिक कुरीतियों का विरोध: सती प्रथा, बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों पर प्रहार किया गया.

17. संथाल विद्रोह (1855-56), जिसे 'संथाल हुल' के नाम से भी जाना जाता है, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और जमींदारी प्रथा के खिलाफ भारत के सबसे सशक्त और प्रभावशाली जनजातीय आंदोलनों में से एक था।

विद्रोह के मुख्य कारण निम्नलिखित थे:

1. जमींदारों का शोषण: अंग्रेजों ने जो नई राजस्व प्रणाली लागू की, उससे जमीन के मालिक जमींदार बन गए। वे संथालों से अत्यधिक लगान वसूलते थे।
2. साहूकारों का ऋणजाल: लगान देने के लिए संथालों को साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता था। साहूकार 50% से 500% तक ब्याज वसूलते थे, जिससे संथाल पीढ़ी-दर-पीढ़ी कर्ज में डूबे रहते थे।
3. पुलिस और कचहरी का भ्रष्टाचार: जब संथाल अपनी शिकायतों के साथ पुलिस या अदालत के पास जाते थे, तो वहां भी उन्हें न्याय नहीं मिलता था क्योंकि पुलिस और अधिकारी जमींदारों का पक्ष लेते थे।
4. बाहरी लोगों (दिक्कू) का हस्तक्षेप: संथाल बाहरी लोगों (व्यापारी, साहूकार, ब्रिटिश अधिकारी) को 'दिक्कू' कहते थे। उनके पारंपरिक जीवन और संस्कृति में बाहरी हस्तक्षेप ने भारी असंतोष पैदा किया।

विद्रोह का नेतृत्व और शुरुआत:

इस विद्रोह का नेतृत्व ने किया था: सिद्धू, कान्हू, और उनके भाइयों ने किया था.

30 जून 1855 को भोगनाडीह गांव में लगभग 400 गांवों के 60,000 से अधिक संथाल एकत्र हुए।

सिद्धू और कान्हू ने घोषणा की कि उन्हें "ठाकुर जी" (ईश्वर) का आदेश मिला है कि अब विदेशियों का शासन समाप्त कर अपना 'संथाल राज्य' स्थापित किया जाए।

अथवा

औपनिवेशिक शासन काल में प्रस्तुत पाँचवीं रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद में पेश की गई एक महत्वपूर्ण सरकारी रिपोर्ट थी, जो भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन और क्रियाकलापों की विस्तृत समीक्षा करती थी।

प्रस्तुति और संरचना: यह रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत की गई थी। इसमें कुल 1002 पृष्ठ थे, जिनमें से 800 से अधिक पृष्ठों में परिशिष्ट (Annexures) जैसे जमींदारों की अर्जियां, जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्टें और राजस्व सांख्यिकी शामिल थी।

रिपोर्ट का उद्देश्य: इसका मुख्य उद्देश्य भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन, विशेष रूप से बंगाल, बिहार और उड़ीसा में उसकी राजस्व (Revenue) और न्यायिक (Judicial) व्यवस्था की जांच करना था।

कंपनी की आलोचना: रिपोर्ट में कंपनी के प्रशासनिक भ्रष्टाचार और अक्षमताओं को उजागर किया गया था। ब्रिटेन में कई समूह (जैसे मुक्त व्यापारी) कंपनी के भारत व्यापार पर एकाधिकार को समाप्त करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने इस रिपोर्ट के माध्यम से कंपनी के कुप्रशासन को मुद्दा बनाया।

जमींदारों की स्थिति: रिपोर्ट में बताया गया कि स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) लागू होने के बाद राजस्व न चुका पाने के कारण कई जमींदारों की संपत्तियां नीलाम हो रही थीं। इसमें जमींदारी व्यवस्था के पतन और किसानों (रैयतों) की खराब आर्थिक स्थिति का वर्णन किया गया था।

प्रशासनिक प्रभाव: इस रिपोर्ट के आधार पर ब्रिटिश संसद ने भारत में कंपनी के शासन को विनियमित करने के लिए कई अधिनियम पारित किए। इसके परिणामस्वरूप 1813 का चार्टर एक्ट आया, जिसने चाय और चीन के साथ व्यापार को छोड़कर कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया।

18. साँची की भव्य मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. बुद्ध का प्रतीकात्मक चित्रण: सांची की प्रारंभिक मूर्तिकला में बुद्ध को मानव रूप में नहीं, बल्कि प्रतीकों के माध्यम से दिखाया गया है। उदाहरण के लिए:-

अ. रिक्त आसन (Empty Seat): बुद्ध के ध्यान का प्रतीक।

ब. पहिया (Dharmachakra): बुद्ध के पहले उपदेश का प्रतीक।

स. स्तूप: उनके महापरिनिर्वाण का प्रतीक।

चरण चिन्ह और बोधि वृक्ष: उनकी उपस्थिति और ज्ञान के प्रतीक।

2. जातक कथाओं का अंकन: तोरण द्वारों पर बुद्ध के पूर्व जन्मों की कहानियों यानी जातक कथाओं (जैसे वेसांतरा जातक) को पत्थर पर बहुत ही विस्तार से उकेरा गया है।

3. शालभंजिका की मूर्ति: तोरण द्वारों के कोनों पर 'शालभंजिका' नामक महिला की मूर्तियाँ हैं, जो एक वृक्ष की शाखा पकड़े हुए दिखाई गई हैं। लोक परंपराओं के अनुसार, इन्हें उर्वरता और शुभ का प्रतीक माना जाता है।

4. पशु-पक्षियों का सजीव चित्रण: नक्काशी में हाथियों, घोड़ों, बंदरों और बैलों को बहुत ही स्वाभाविक रूप से दिखाया गया है। इन जानवरों का उपयोग अक्सर मानवीय गुणों या बुद्ध के जीवन की घटनाओं को दर्शाने के लिए किया गया है।

5. विविध सामाजिक दृश्यों का समावेश: मूर्तिकला केवल धार्मिक विषयों तक सीमित नहीं है। इनमें तत्कालीन समाज के रोजमर्रा के जीवन, जैसे किसानों, संगीतकारों, जुलूसों और उत्सवों के दृश्यों को भी बखूबी उकेरा गया है।

6. उन्नत नक्काशी तकनीक: पत्थर को लकड़ी या हाथीदांत की तरह बारीकी से तराशा गया है। इतिहासकारों के अनुसार, विदिशा के हाथीदांत के कारीगरों ने भी इन द्वारों की नक्काशी में योगदान दिया था। कोई 5 बिंदु लिखने पर पूरे अंक प्रदान किए जाए

अथवा

- "ई. पू. 600 से ई. 600 के बीच पौराणिक हिन्दू धर्म में मूर्ति पूजा और मंदिर वास्तुकला का क्रमिक विकास हुआ।

मूर्ति कला का विकास

प्रारंभिक चरण (600 ई.पू. - 200 ई.पू.): इस दौरान वैदिक देवता निराकार माने जाते थे और पूजा अस्थायी स्थलों या यज्ञ वेदियों पर होती थी। शुरुआती मूर्तियाँ प्रतीकात्मक थीं, जैसे सांची के स्तूप में शालभंजिका (लोक परंपरा)।

मध्य चरण (200 ई.पू. - 300 ई.): गांधार और मथुरा कला शैलियों के प्रभाव से हिंदू और बौद्ध देवताओं की मानव-आकार की मूर्तियाँ बनने लगीं। कुषाण काल में मूर्तिकला को बहुत प्रोत्साहन मिला।

स्वर्ण युग (320 ई. - 600 ई.): गुप्त काल में मूर्तिकला अपने शिखर पर पहुँच गई। विष्णु, शिव, दुर्गा की सुव्यवस्थित और आध्यात्मिक मूर्तियाँ बनने लगीं, जो मंदिर के गर्भगृह में स्थापित की जाने लगीं।

मंदिर वास्तुकला का विकास

शुरुआती मंदिर (600 ई.पू. - 300 ई.): मंदिरों का उल्लेख गृह्य सूत्रों में मिलता है, लेकिन शुरुआती संरचनाएँ कच्ची मिट्टी या लकड़ी की होती थीं।

स्थायी मंदिर (300 ई. - 500 ई.): सांची स्तूप संख्या 17 (2वीं शताब्दी ई.पू.) के बाद, गुप्त काल में पत्थर के पक्के मंदिर बने (जैसे देवगढ़ का दशावतार मंदिर)।

विशिष्ट शैलियों का उदय (500 ई. - 600 ई.):

उत्तरी भारत: नागर शैली के मंदिरों में ऊँचे शिखर का विकास हुआ।

दक्षिणी भारत: चालुक्य और पल्लव काल में (6वीं शताब्दी के बाद) गुफा मंदिरों (बादामी) और चट्टान काटकर बनाए गए मंदिरों (रथ मंदिर) का विकास शुरू हुआ।

19. हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन अत्यंत उन्नत था, जिसमें सड़कें सीधी थीं, घर पक्की ईंटों के बने थे, और एक सुनियोजित जल निकासी व्यवस्था थी। नगर को अक्सर दो या अधिक भागों में विभाजित किया जाता था, जो एक उच्च स्तर की इंजीनियरिंग और संगठन को दर्शाता है।

अथवा

हड़प्पा सभ्यता के अंत के कई संभावित कारण माने जाते हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. आर्यों का आक्रमण,
2. जलवायु परिवर्तन,
3. नदियों के मार्ग में बदलाव,
4. महामरी
5. प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़ या सूखा।

कोई एक कारण निश्चित रूप से स्थापित

किन्ही पांच बिंदुओं की व्याख्या करने पर पूरे अंक दिए जाए

20. महाजनपद छठी शताब्दी ईसा पूर्व (600 BCE) में उत्तर भारत में उभरे बड़े और शक्तिशाली राज्यों को महाजनपद कहा जाता है।

व्युत्पत्ति: 'जनपद' शब्द दो शब्दों 'जन' (लोग/जनजाति) और 'पद' (पैर) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है वह स्थान जहाँ किसी जनजाति ने अपना पैर रखा या बस गए।

विशेषता: बौद्ध और जैन ग्रंथों में 16 महाजनपदों की सूची मिलती है। इनमें से अधिकांश पर राजा का शासन (राजतंत्र) होता था, लेकिन कुछ 'गण' या 'संघ' थे जहाँ शासन कई लोगों के समूह द्वारा किया जाता था (जैसे वज्जि)।

चार प्रमुख महाजनपद

1. मगध (Magadha)

यह सबसे शक्तिशाली महाजनपद बनकर उभरा।

स्थान: आधुनिक बिहार।

राजधानी: प्रारंभ में राजगृह (पहाड़ियों के बीच बसा एक किला), बाद में चौथी शताब्दी ई.पू. में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया।

शक्ति के कारण: उपजाऊ भूमि, लोहे की खदानें (आधुनिक झारखंड में) और सेना में हाथियों का प्रयोग।

2. कोसल

यह उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण महाजनपद था।

राजधानी: श्रावस्ती।

विशेषता: यहाँ के राजा प्रसेनजित बुद्ध के समकालीन थे। यह राज्य व्यापारिक मार्गों के पास होने के कारण आर्थिक रूप से समृद्ध था।

3. वज्जि

यह एक गण या संघ का उदाहरण था।

राजधानी: वैशाली (बिहार)।

शासन व्यवस्था: यहाँ शासन किसी एक राजा के हाथ में न होकर कई 'राजाओं' के समूह के हाथ में था। ये सभी मिलकर महत्वपूर्ण निर्णयों पर सभाओं में चर्चा करते थे। भगवान महावीर और बुद्ध दोनों ही ऐसे गणों से संबंधित थे।

4. गांधार

यह भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिम में स्थित था।

राजधानी: तक्षशिला।

विशेषता: तक्षशिला उस समय का एक प्रसिद्ध व्यापारिक और शिक्षा का केंद्र था। यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्गों से जुड़ा हुआ था, जिससे इसकी महत्ता बहुत अधिक थी।

अथवा

समुद्रगुप्त गुप्त वंश के सबसे महान और शक्तिशाली शासक थे। उन्हें उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग प्रशस्ति' (अशोक स्तंभ पर खुदा हुआ अभिलेख) के माध्यम से जाना जाता है।
समुद्रगुप्त को उनकी सैन्य विजयों के कारण इतिहासकार वी.ए. स्मिथ ने 'भारत का नेपोलियन' कहा जाता हैं

समुद्रगुप्त के शासन की प्रमुख विशेषताएँ

समुद्रगुप्त का शासन केवल युद्धों के लिए नहीं, बल्कि कुशल प्रशासन और सांस्कृतिक प्रगति के लिए भी जाना जाता है:

1. महान विजेता (सैन्य अभियान):

प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार, समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

आर्यावर्त (उत्तर भारत): -
दक्षिणापथ (दक्षिण भारत): राज्य वापस कर दिया (ग्रहण-मोक्षानुग्रह नीति), बशर्ते वे कर (Tax) दें।
अटविक राज्य: वन क्षेत्रों के राजाओं को अपना सेवक बना लिया।

सीमावर्ती राज्य: नेपाल, असम और बंगाल के राज्यों ने उनकी अधीनता स्वीकार की।

2. कुशल प्रशासक:

समुद्रगुप्त ने एक विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था अपनाई। उन्होंने जीते हुए राज्यों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया ताकि विद्रोह कम हो और साम्राज्य स्थिर रहे। उन्होंने अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए **'अश्वमेध यज्ञ'** भी किया।

3. कला और संगीत के संरक्षक:

समुद्रगुप्त केवल एक योद्धा ही नहीं, बल्कि एक कवि और संगीतज्ञ भी थे।उन्हें सिक्कों पर **वीणा बजाते हुए** दिखाया गया है, जो उनके संगीत प्रेम का प्रमाण है। उन्हें 'कविराज' की उपाधि भी दी गई थी।

4. धार्मिक सहिष्णुता: वे स्वयं भगवान विष्णु के उपासक (वैष्णव) थे, लेकिन वे अन्य धर्मों का भी सम्मान करते थे। उन्होंने लंका के राजा मेघवर्मन को बोधगया में बौद्ध विहार बनाने की अनुमति दी थी।

5. मुद्रा व्यवस्था: समुद्रगुप्त ने कई प्रकार के सोने के सिक्के चलाए (जैसे- धनुर्धारी, परशु, और अश्वमेध प्रकार के सिक्के), जो गुप्त काल की आर्थिक समृद्धि और उच्च कोटि की कला को दर्शाते हैं।

21. विजयनगर साम्राज्य के मंदिर वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं
1. उनकी भव्यंता, जटिल नक्काशी और अद्वितीय संरचनात्मक डिज़ाइन थीं।
2. विशाल गोपुरम: मंदिरों के प्रवेश द्वार पर ऊँचे और भव्य गोपुरम (प्रवेश द्वार टावर) बनाए जाते थे, जो दूर से दिखाई देते थे।
3. कल्याण मंडप: ये विस्तृत नक्काशीदार स्तंभों वाले खुले मंडप थे, जहाँ देवताओं के विवाह समारोह जैसे अनुष्ठान आयोजित किए जाते थे।
4. एकाश्मक स्तंभ: कई स्तंभ एक ही पत्थर से तराशे जाते थे और उन पर घोड़ों, हाथियों या पौराणिक जीवों की मूर्तियाँ उकेरी जाती हैं ।

अथवा

विजय नगर साम्रराज्य में महाननवमी डिब्बा के महत्त्व का वर्णन।
महानवमी डिब्बा एक विशाल मंच था, जो विजयनगर साम्राज्य में महानवमी त्योहार के दौरान शाही अनुष्ठानों के लिए महत्वपूर्ण था।
यह शाही शक्ति, प्रतिष्ठा और संप्रभुता का प्रतीक था। इस पर राजा जनता के सामने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते थे, जिसमें अनुष्ठानिक पूजा, नृत्य, कुश्ती, हाथियों और घोड़ों की परेड और सैनिकों के प्रदर्शन शामिल थे। यह केंद्र सरकार के नियंत्रण और प्रभाव को दर्शाने का एक महत्वपूर्ण साधन था।

22. भारत छोड़ो आंदोलन, जिसे 'अगस्त क्रांति' भी कहा जाता है, 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी के आह्वान पर शुरू हुआ एक निर्णायक जन संघर्ष था, जिसका लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को तत्काल समाप्त करना था।
यह आंदोलन क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद शुरू किया गया था।आंदोलन के मुख्य बिंदुओं में शामिल हैं:
आंदोलन की शुरुआत: 8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बंबई सत्र में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया गया.
करो या मरो का नारा: गांधीजी ने भारतीयों से 'करो या मरो' का आह्वान किया.

गिरफ्तारियां और स्वतः स्फूर्त हिंसा: गांधीजी और लगभग सभी प्रमुख नेताओं को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया, जिसके बाद देश भर में स्वतः स्फूर्त विरोध प्रदर्शन और हिंसा की घटनाएं हुईं.
समांतर सरकारें: देश के कुछ हिस्सों, जैसे बलिया, तामलुक और सतारा, में समानांतर या अस्थायी स्वतंत्र सरकारें स्थापित की गईं.
नेतृत्व और भागीदारी: जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, और उषा मेहता जैसे नेताओं ने भूमिगत गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई; महिलाओं ने भी सक्रिय रूप से भाग लिया.

अथवा

नमक सत्याग्रह, जिसे दांडी मार्च भी कहा जाता है, महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1930 में ब्रिटिश नमक कानून के खिलाफ एक अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन था। इसका उद्देश्य नमक पर ब्रिटिश एकाधिकार और कर को समाप्त करना था।
मुख्य विवरण यात्रा: गांधीजी ने साबरमती आश्रम से गुजरात के तटीय शहर दांडी तक लगभग 240 मील की पदयात्रा की।
कानून तोड़ना: 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचकर, उन्होंने समुद्र के पानी से नमक बनाकर प्रतीकात्मक रूप से नमक कानून तोड़ा।
देशव्यापी प्रभाव: इस घटना ने पूरे भारत में इसी तरह के विरोध प्रदर्शनों हुए

23. भारतीय संविधान के उद्देश्य प्रस्ताव (प्रस्तावना) की मुख्य विशेषताएँ संप्रभुता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और गणराज्य हैं।
इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:
1. संप्रभुता: भारत एक स्वतंत्र देश है, जो अपने आंतरिक और बाहरी मामलों में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र है।
2. समाजवाद: यह सामाजिक और आर्थिक समानता सुनिश्चित करता है, और धन के असमान वितरण को कम करने का प्रयास करता है।
3. धर्मनिरपेक्षता: राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं है, और सभी नागरिकों को अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता है।
4. लोकतंत्र: सरकार लोगों द्वारा चुनी जाती है और लोगों के प्रति जवाबदेह होती है।
5. गणराज्य: देश का मुखिया (राष्ट्रपति) वंशानुगत नहीं, बल्कि एक निर्वाचित व्यक्ति होता है।
6. न्याय, स्वतंत्रता और समानता: यह सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित करता है, साथ ही विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और पूजा की स्वतंत्रता और स्थिति और अवसर की समानता प्रदान करता है।

अथवा

भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएँ:
1. सबसे लंबा लिखित संविधान:- भारतीय संविधान विश्व का सबसे विस्तृत और लंबा लिखित संविधान है। मूल रूप से इसमें 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियां थीं, जो अब बढ़कर लगभग 470 अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियां हो गई हैं।
2. विभिन्न स्रोतों से निर्मित:- इसके अधिकांश प्रावधान दुनिया के अन्य देशों के संविधानों (जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि) से लिए गए हैं, लेकिन उन्हें भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ढाला गया है।
3. कठोरता और लचीलेपन का मिश्रण:- इसमें कुछ संशोधन संसद द्वारा आसानी से (लचीला) और कुछ को राज्यों की सहमति से (कठोर) किया जा सकता है, जो समय की माँग के अनुसार बदलाव की अनुमति देता है।
4. संसदीय प्रणाली:- भारत में संसदीय स्वरूप अपनाया गया है, जिसमें विधायिका और कार्यपालिका के बीच सामंजस्य होता है। राष्ट्रपति नाममात्र का जबकि प्रधानमंत्री वास्तविक कार्यकारी प्रमुख होता है।
5. मौलिक अधिकार, कर्तव्य और नीति निर्देशक सिद्धांत:- नागरिकों को छह मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 12-35) दिए गए हैं। साथ ही, राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत और 11 मौलिक कर्तव्य भी शामिल हैं।

धर्मनिरपेक्ष राज्य: भारत का अपना कोई आधिकारिक धर्म नहीं है। संविधान सभी धर्मों को समान सम्मान और सुरक्षा प्रदान करता है।

6. स्वतंत्र और एकीकृत न्यायपालिका:- सर्वोच्च न्यायालय के साथ एक स्वतंत्र न्यायपालिका है, जो नागरिकों के अधिकारों की रक्षा और संविधान की व्याख्या करती है।

एकल नागरिकता:- राज्यों के होने के बावजूद भारत में सिर्फ 'भारतीय' नागरिकता का प्रावधान है, न कि किसी विशेष राज्य की।

7. सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार:- 18 वर्ष या उससे अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को धर्म, जाति, या लिंग के भेदभाव के बिना वोट देने का अधिकार है।

8. आपातकालीन प्रावधान:- देश की एकता और सुरक्षा के लिए राष्ट्रपति को राष्ट्रीय, राज्य और वित्तीय आपातकाल (अनुच्छेद 352, 356, 360) लगाने की विशेष शक्तियां प्राप्त हैं।

9. त्रिस्तरीय सरकार: 73वें और 74वें संशोधन द्वारा केंद्र और राज्य के अलावा स्थानीय स्वशासन (पंचायत और नगरपालिका) को शामिल किया गया है।

24. भारत एवं सीमावर्ती देशों के मानचित्र में निम्नलिखित में से किन्ही चार स्थानों को पहचान कर दर्शाइए - 4

नोट-मानचित्र पूर्ति कर मानचित्र को उत्तर पुस्तिका में संलग्न करें

1. लुम्बिनी
2. चंपारण
3. सम्राट अशोक का अंतिम युद्ध स्थल- कलिंग
4. नागार्जुनकोंड

अथवा

1. गोलकुंडा
2. सांची
3. दांडी
4. सिंधु सभ्यता का नगर – हडप्पा

प्रश्न क्र० 24 का → उत्तर

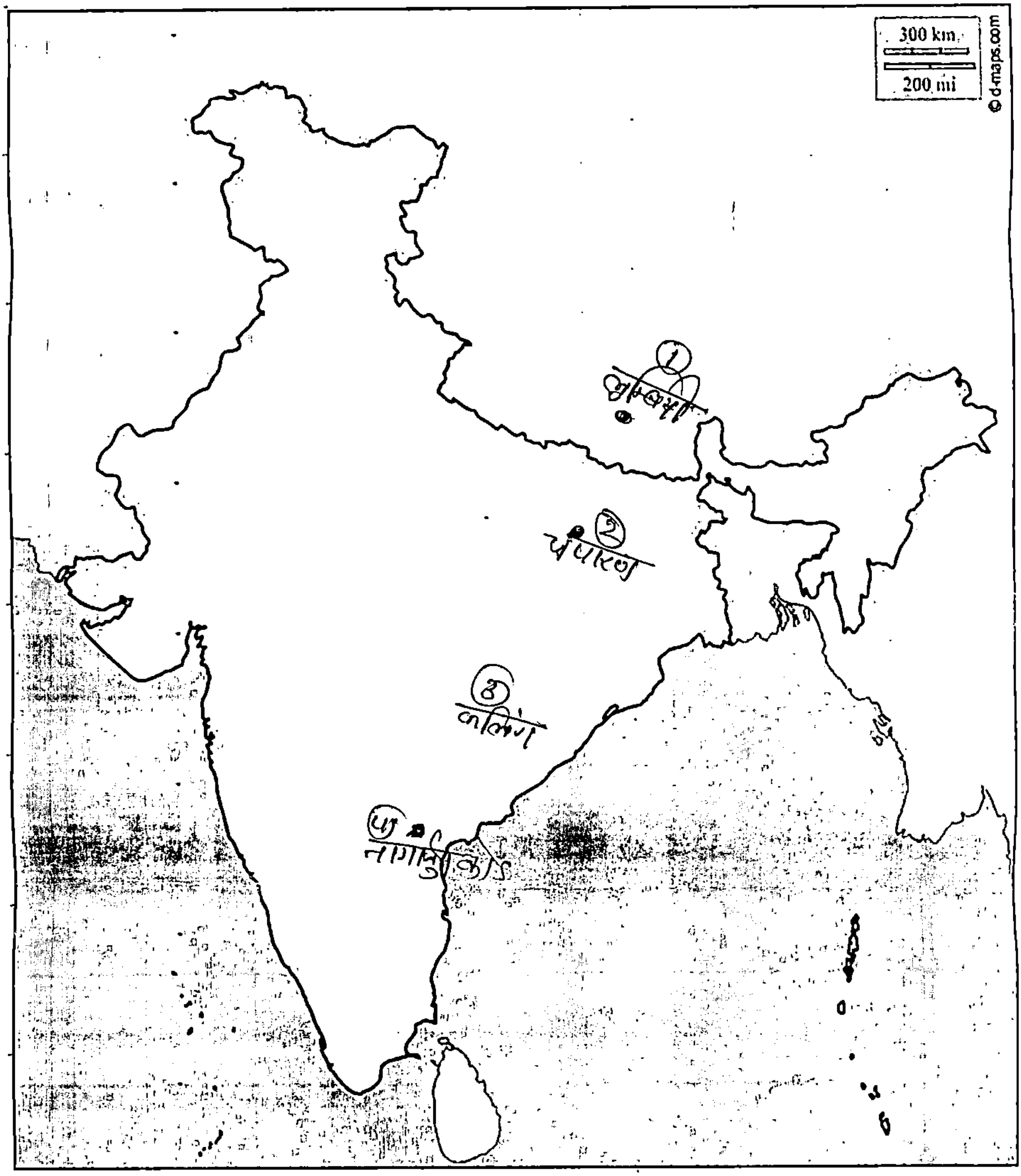

प्रश्न क्र० 24 का अथवा